IJMRSETM

e-ISSN: 2395 - 7639

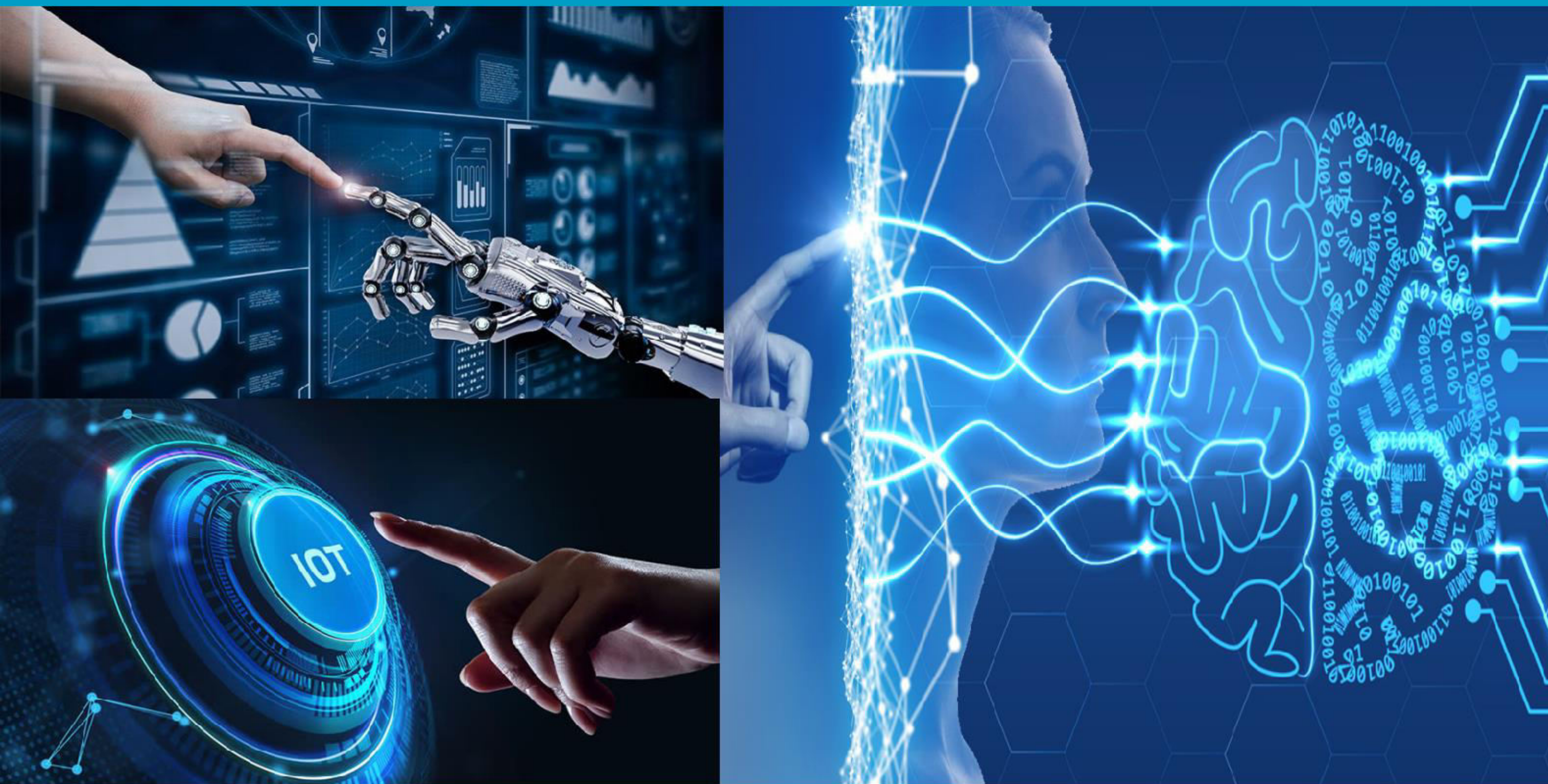

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

Volume 9, Issue 12, December 2022

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.580

+91 99405 72462 +9163819 07438 ijmrsetm@gmail.com www.ijmrsetm.com

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 12, December 2022 |

स्वामी विवेकानन्द के राष्ट्रवाद सम्बन्धी विचारों की वर्तमान में उपादेयता

Devendar Kumar

M.A, Department of History, NET, Bhalikhal (Dhorimana), Barmer, Rajasthan, India

सार: विभिन्न समस्याओं पर उनके विचारों ने राष्ट्र को एक नई दिशा दी । वे कहते हैं, "शिक्षा आंतरिक आत्म की खोज है ।" वह शिक्षा के माध्यम से व्यक्तित्व के व्यापक विकास में विश्वास करते हैं । स्वामी विवेकानंद का मानना था कि "शिक्षा मनुष्य में पहले से ही पूर्णता की अभिव्यक्ति है" ।

I. परिचय

विवेकानंद मूल रूप से एक तपस्वी साधु थे, राजनीतिक दार्शनिक या सिद्धांतवादी नहीं, फिर भी उन्हें देश, इसकी संस्कृति और सामाजिक व्यवस्था के प्रति गहरा प्रेम था। "विवेकानंद राजनीतिक आंदोलन के पक्ष में नहीं थे, हालांकि, वे दिल से एक शक्तिशाली, वीर और गतिशील राष्ट्र बनाना चाहते थे। वे धर्म को राष्ट्रीय जीवन के संगीत की स्थायी ध्वनि मानते थे।" स्वामीजी गांधीजी की तरह राजनीति को आध्यात्मिक बनाना चाहते थे। एक राजनीतिक चिंतक के रूप में विवेकानंद जन-कल्याणकारी राजनीति के समर्थक थे और गांधी की तरह राजनीति को धर्म और सार्वभौमिकता के आधार पर रखना चाहते थे। स्वामी विवेकानंद के गुरु का नाम रामकृष्ण परमहंस था। उन्होंने अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस के नाम पर रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। जल्द ही वे रामकृष्ण के सबसे नामी शिष्यों की लिस्ट में शुमार हो गए। उन्होंने ब्रह्म समाज ज्वाइन किया जिसका उद्देश्य बाल विवाह और अशिक्षा को खत्म कर लोवर क्लास और महिलाओं के बीच शिक्षा को पहुंचाया था। विवेकानंद का हिंदू धर्म और आध्यात्म के लिए गहरा लगाव था। उनसे स्वामी की मुलाकात तर हुई जब वे ईश्वर की खोज कर रहे थे।[1,2,3]

"केप कैमोरिन में मदर कुमारी के मंदिर में, भारतीय चट्टान के आखिरी टुकड़े पर बैठे हुए - मुझे एक योजना सूझी: हम इतने सारे संन्यासी हैं जो इधर-उधर भटक रहे हैं, और लोगों को तत्वमीमांसा सिखा रहे हैं - यह सब पागलपन है। क्या हमारे गुरुदेव ने नहीं कहा था, 'खाली पेट धर्म के लिए अच्छा नहीं है?' एक राष्ट्र के रूप में हमने अपनी वैयक्तिकता खो दी है और यही भारत में सभी शरारतों का कारण है। हमें जनता को ऊपर उठाना होगा"

यह वही है जो स्वामी विवेकानंद ने कन्याकुमारी में "भारतीय चट्टान के अंतिम टुकड़े" (जिसे बाद में नरेंद्र चट्टान स्मारक के रूप में जाना जाता है) पर ध्यान करते समय "एक भारत के दृष्टिकोण" के बारे में कहा था। भारतीय जनता की दयनीय स्थिति से द्रवित होकर उन्होंने उनमें मातृभूमि भारत के प्रति सेवा और आत्म बलिदान की भावना भर दी।

"मैं एक भारतीय हूँ और हर भारतीय मेरा भाई है।" "अज्ञानी भारतीय, गरीब और निराश्रित भारतीय, ब्राह्मण भारतीय, बहिष्कृत भारतीय मेरा भाई है।" "भारतीय मेरा भाई है, भारतीय मेरा जीवन है, भारत के देवी-देवता मेरे भगवान हैं, भारत का समाज मेरे बचपन का पालना है, मेरी जवानी का आनंद उद्यान है, पवित्र स्वर्ग है, मेरे बुढ़ापे की वाराणसी है।" "भारत की धरती मेरा सर्वोच्च स्वर्ग है; भारत का भला ही मेरा भला है।" ये देशभक्त संत स्वामी विवेकानंद के कुछ कथन थे जिन्होंने भारतीयों के बीच एक राष्ट्र के रूप में उनकी पहचान की चेतना को बढ़ावा दिया।

यद्यपि राष्ट्रवाद के विकास का श्रेय पश्चिमी प्रभाव को दिया जाता है, लेकिन स्वामी विवेकानंद का राष्ट्रवाद भारतीय आध्यात्मिकता और नैतिकता में गहराई से निहित है। उन्होंने औपनिवेशिक भारत में राष्ट्रवाद की अवधारणा में बहुत योगदान दिया और 20वीं सदी में भारत को आगे बढ़ाने में विशेष भूमिका निभाई । 20 वीं सदी के युवाओं पर उनका प्रभाव प्रतिष्ठित है।

स्वामी विवेकानंद, जिनका जन्म 12 जनवरी, 1863 को भुवनेश्वरी देवी और विश्वनाथ दत्त के घर नरेंद्र नाथ दत्त के रूप में हुआ था, एक भिक्षु और रामकृष्ण परमहंस के मुख्य शिष्य थे। उन्होंने पश्चिमी दुनिया को वेदांत और योग के भारतीय दर्शन से परिचित कराया और 19वीं सदी के अंत में हिंदू धर्म को विश्व मंच पर लाने के लिए अंतर-धार्मिक जागरूकता बढ़ाने का श्रेय उन्हें दिया जाता है ।

डॉ. राधाकृष्णन ने कहा है, "राष्ट्रवाद एक राजनीतिक धर्म है जो लोगों के दिलों और इच्छाओं को झकझोरता है और उन्हें सेवा और आत्म बलिदान के लिए उकसाता है, जैसा कि हाल के समय में किसी भी विशुद्ध धार्मिक आंदोलन ने नहीं किया है।" इस टिप्पणी से

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 12, December 2022 |

बहुत पहले स्वामी विवेकानंद ने भारतीयों के दिलों और दिमागों को शक्ति और निर्भयता के लिए उत्साह से भर दिया था ; वे राष्ट्र के लिए सेवा और आत्म बलिदान के लिए तैयार थे।

स्वामी विवेकानंद का राष्ट्रवाद आध्यात्म से जुड़ा है। उन्होंने भारत के उत्थान को आध्यात्मिक लक्ष्य की उसकी सदियों पुरानी परंपरा से जोड़ा। उन्होंने कहा, "प्रत्येक राष्ट्र के पास पूरा करने के लिए एक नियति होती है, प्रत्येक राष्ट्र के पास देने के लिए एक संदेश होता है, प्रत्येक राष्ट्र के पास पूरा करने के लिए एक मिशन होता है। इसलिए हमें अपनी जाति के मिशन, उसे पूरा करने के लिए नियति, राष्ट्रों की यात्रा में उसे जो स्थान प्राप्त करना है, जातियों के सामंजस्य में उसे जो भूमिका निभानी है, उसे समझना होगा।" उनका राष्ट्रवाद मानवतावाद और सार्वभौमिकता पर आधारित है, जो भारतीय आध्यात्मिक संस्कृति की दो प्रमुख विशेषताएं हैं। उन्होंने लोगों को सबसे पहले खुद पर लगाए गए बंधनों और उसके परिणामस्वरूप होने वाले दुखों से छुटकारा पाने की शिक्षा दी।

उनके राष्ट्रवाद की प्रकृति भौतिकवादी नहीं बल्कि विशुद्ध आध्यात्मिक है, जिसे भारतीय जीवन की समस्त शक्ति का स्रोत माना जाता है। पश्चिमी राष्ट्रवाद के विपरीत, जो कि स्वभाव से धर्मनिरपेक्ष है, स्वामी विवेकानंद का राष्ट्रवाद धर्म पर आधारित है, जो कि भारतीय लोगों का जीवन रक्त है। जनता के प्रति गहरी चिंता, स्वतंत्रता और समानता जिसके माध्यम से व्यक्ति स्वयं को अभिव्यक्त करता है, [4,5,6]विश्व बंधुत्व के आधार पर विश्व का आध्यात्मिक एकीकरण और निस्वार्थ सेवा के माध्यम से राजनीतिक और आध्यात्मिक दोनों तरह की स्वतंत्रता प्राप्त करने की नैतिकता की प्रणाली "कर्मयोग" उनके राष्ट्रवाद का आधार है।

उनके लेखन और भाषणों का जादुई असर होता था। उनके शब्दों ने न केवल भारतीयों के मन को झकझोरा बल्कि मातृभूमि के प्रति प्रेम भी जगाया। उन्होंने मातृभूमि को देशवासियों के मन और हृदय में पूज्यनीय देवता के रूप में स्थापित किया।

उन्होंने भारतीय हितों की पूरी तरह अनदेखी करते हुए मुनाफाखोरी की ब्रिटिश नीति को उजागर करके राष्ट्रीय भावना को प्रेरित किया। भारतीय परिप्रेक्ष्य में यूरोपीय औपनिवेशिक योजनाओं की व्याख्या करते हुए, उन्होंने ब्रिटिश शासकों का मनोबल गिराया। उन्होंने राष्ट्रवादी आंदोलन को लोकप्रिय बनाया जिसने पूरे देश में धूम मचा दी और एक नए भारत का उदय हुआ। जैसा कि उन्होंने कहा, "एक नया भारत किसान की झोपड़ी से निकलकर हल पकड़ता है; मछुआरे, मोची और सफाईकर्मी के दिलों से निकलकर आता है। इसे पंसारी की दुकान से, पकोड़े बेचने वाले के चूल्हे के पास से निकलने दें। इसे कारखाने से, बाजारों से और बाज़ारों से निकलने दें। इसे पेड़ों और जंगलों से, पहाड़ियों और पहाड़ों से निकलने दें"

स्वामी विवेकानंद के भाषणों और लेखों ने भारतीयों के मन और हृदय में जो साहस और दृढ़ संकल्प भर दिया था, वह सभी विरोधों के बावजूद हर परिस्थिति का सामना करने के लिए था। इस साहस और दृढ़ संकल्प को अरबिंदो घोष ने पीढ़ी दर पीढ़ी पोषित किया। सर्वोच्च बलिदान के लिए तैयार इस भारतीय मानसिकता ने महात्मा गांधी के "अहिंसा" और "सत्याग्रह" पर आधारित स्वतंत्रता आंदोलन की सफलता के लिए आधार प्रदान किया।

स्वामी विवेकानंद ने आध्यात्मिकता को विविधतापूर्ण भारत की सभी धार्मिक शक्तियों के लिए अभिसरण बिंदु के रूप में देखा, जो एक राष्ट्रीय धारा में एकीकृत होने में सक्षम है। विवेकानंद की तरह, अरबिंदो घोष और महात्मा गांधी ने भी महसूस किया कि धर्म और आध्यात्मिकता भारतीयों की रगों में है और उन्होंने धर्म और आध्यात्मिकता की शक्ति को जागृत करके भारत के एकीकरण के लिए काम किया।

1893 में शिकागो में दिए गए उनके भाषण ने उन्हें विश्व धर्म संसद में सबसे महान व्यक्ति और भारत को धर्म की जननी के रूप में स्थापित किया । "दुनिया के सबसे प्राचीन भिक्षुओं के संप्रदाय, संन्यासियों के वैदिक संप्रदाय, एक धर्म जिसने दुनिया को सहिष्णुता और सार्वभौमिक स्वीकृति दोनों सिखाई है" की ओर से सबसे युवा राष्ट्र को बधाई देते हुए स्वामी विवेकानंद ने " शिव महिम्न स्तोत्रम " से दो उदाहरणात्मक अंश उद्धृत किए : "जिस प्रकार विभिन्न स्थानों से अपने स्रोत रखने वाली विभिन्न धाराएँ समुद्र में अपना जल मिलाती हैं, उसी प्रकार, हे प्रभु, मनुष्य द्वारा विभिन्न प्रवृत्तियों के माध्यम से अपनाए गए विभिन्न मार्ग, भले ही वे अलग-अलग दिखाई दें, टेढ़े या सीधे, सभी आप तक ले जाते हैं!" और "जो कोई भी मेरे पास आता है, चाहे वह किसी भी रूप में हो, मैं उस तक पहुँचता हूँ; सभी लोग उन मार्गों से संघर्ष कर रहे हैं जो अंततः मुझे ही ले जाते हैं।"

उनके भाषण की संक्षिप्तता के बावजूद, इसमें संसद की सार्वभौमिकता की भावना और भावना को व्यक्त किया गया। संसद में उनके अन्य भाषणों में भी सार्वभौमिकता का सामान्य विषय था, जिसमें धार्मिक सहिष्णुता पर जोर दिया गया था।

21 वीं सदी की शुरुआत से ही दुनिया उथल-पुथल में है और एक तरह के संक्रमण काल से गुजर रही है। मानव इतिहास के इस दौर में स्वामी विवेकानंद का संदेश, जो सार्वभौमिक भाईचारे और सद्भावना के आधार पर राष्ट्र और दुनिया के आध्यात्मिक एकीकरण को बढ़ावा देता है, और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है। इसमें युद्धों को टालने और व्यक्तियों और राष्ट्रों के बीच शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व सुनिश्चित करने की क्षमता है।[7,8,9]

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 12, December 2022 |

II. विचार-विमर्श

स्वामी विवेकानंद जी 1893 से भारत और विदेश में एक प्रसिद्ध व्यक्तित्व हैं. वे 1893 में शिकागो में आयोजित धर्म संसद में हिंदू धर्म पर अपने भाषण के ठीक बाद पूर्व और पश्चिम दोनों देशों में एक प्रेरणादायक व्यक्तित्व बन गए. उनके विचार एक दर्शन बन गए हैं, जिसे दुनिया भर में लोगों ने अपनाया है.21 वीं सदी में, भारत की युवा और उत्साही आबादी, जो आज अपने कार्यों से कल को बदल रही है, एक उद्देश्यपूर्ण संत नरेंद्रनाथ दत्ता (स्वामी विवेकानंद) के सपने को जी रही है. 13 साल की अल्पायु में सभी रचनाओं के मूल में निहित सत्य को जानने की दृढ़ प्रतिबद्धता के साथ वे एक ऐसी यात्रा पर निकले जो एक किंवदंती बन गई.

विवेकानंद के विचार

आज के भारत के लिए विवेकानंद के योगदान को 3 सी यानी कम्युनिटी, करेज और कंट्री (समुदाय, साहस और देश) के रूप में वर्णित किया जा सकता है. जीवन की दुविधाओं में फंसा, कोई भी युवा व्यक्ति, भारत के महान संत से एक विचार उधार ले सकता है और साहस के साथ कठिनाइयों से लडना सीख सकता है और अपने देश और समुदाय की सेवा कर सकता है. उनका जीवन और शिक्षाएं, पश्चिम के लिए एशिया के दिमाग को समझने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण मूल्य हैं. हार्वर्ड के दार्शनिक, विलियम जेम्स, ने स्वामी को 'वेदांतवादियों का आदर्श' कहा. उन्नीसवीं सदी के प्रसिद्ध प्राच्यविद् मैक्स मूलर और पॉल डूसन ने उन्हें वास्तविक सम्मान और स्नेह प्रदान किया. ''उनके शब्द'', रोमेन रोलैंड लिखते हैं, ''महान संगीत, बीथोवेन की शैली में वाक्यांश हैं, हेंडेल कोरस के मार्च की तरह ताल मिलाते हैं. मैं उनकी इन बातों को नहीं छू सकता, क्योंकि वे बिजली के झटके की तरह मेरे शरीर के माध्यम से एक रोमांच प्राप्त किए बिना, 30 वर्षों की दूरी पर पुस्तकों के पन्नों के माध्यम से बिखरे हुए हैं. और मैं इसकी परिकल्पना नहीं कर सकता कि जब वे नायक के होंठों से ज्वलंत शब्दों में अभिव्यक्त हुए होंगे, तो कितने कंपन और कितने प्रभाव उत्पन्न हुए होंगे.''

अपने समुदाय आधारित दृष्टिकोण को व्यक्त करके, स्वामी विवेकानंद एक मजबूत और आत्मनिर्भर समुदाय के रूप में 'भारत का उत्थान' देखते हैं. इसे प्राप्त करने के लिए, वे भारत के लोगों को एकजुट होने के लिए प्रेरित करते हैं और समाज से अंधविश्वासों, सामाजिक बुराइयों और जातिगत श्रेष्ठता को जड़ से उखाड़ फेंकने की बात करते हैं. जाति व्यवस्था को देश की एकता और अखंडता में सबसे बड़ी बाधा मानते हुए, उन्होंने सभी भारतीयों से इसे त्यागने और जाति आधारित सामाजिक पदानुक्रम की नीरस प्रकृति को तोडने की अपील की. अपने कार्यकर्ताओं के लिए एक बार उन्होंने कहा था कि 'मैं भारतीयों में ताकत, मर्दानगी, क्षत्रियत्व, या एक योद्धा और ब्रह्म-तेज या एक ब्राह्मण की चमक देखना चाहता हूं .... ये लोग दुनिया से अलग खड़े होंगे, अपना जीवन समर्पित करेंगे, सत्य की लड़ाई लडने के लिए तैयार होंगे, देश-देश जाकर अलख जगाएंगे. भारत के बाहर लगा एक झटका उसके भीतर एक सौ हजार झटकों के बराबर होगा. ठीक है, प्रभु इच्छा होगी तो सब ठीक होगा.'' उनके ये विचार अपने देशवासियों और राष्ट्र के प्रति उनके प्यार और स्नेह को दर्शाते हैं.

युवाओं को अपने संबोधन में उन्होंने उन्हें अनुकरणीय साहस दिखाने और निस्वार्थ सेवा में अपना जीवन समर्पित करने का निर्देश दिया.[10,11,12]
''उठो, जागो और तब तक मत रुको, जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए''

नव-वेदांत के अपने सिद्धांत में वे स्पष्ट करते हैं कि मनुष्य की सेवा ईश्वर की सेवा है, इसलिए जीवन में पूर्ण त्याग को अपनाने के बजाय समाज के प्रति निस्वार्थ कर्म के पथ पर बढना चाहिए. वह आगे कहते हैं कि यह प्रत्येक व्यक्ति की प्रमुख जिम्मेदारी है कि वह अपने ज्ञान का संचार करके जनता को जगाने का काम करे और एकता की भावना को आत्मसात करे. समाज के प्रत्येक व्यक्ति को राष्ट्र के लिए बलिदान के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए.

''दिन में एक बार अपने आप से बात करें, अन्यथा आप इस दुनिया में एक उत्कृष्ट व्यक्ति से मिलने से चूक सकते हैं''

विवेकानंद का पूरा दर्शन देश की धुरी पर चलता है. एक महान राष्ट्रवादी होने के नाते, समुदाय, साहस, नव-वेदांत, सामाजिक परिवर्तन और लोकतंत्र की उनकी सभी अवधारणाएं पुनरुत्थानवादी भारत के उनके सपने के चारों ओर घूमती हैं और इसे एक महान और शक्तिशाली राष्ट्र में परिवर्तित करती हैं. इसके लिए, वे धर्म को राष्ट्रीय एकता के आधार के रूप में और समर्पित युवाओं को मजबूत राष्ट्र के इस विचार को प्राप्त करने के लिए एक साधन के रूप में मानते हैं. यूरोप में, राजनीतिक विचारों ने राष्ट्र की नींव रखी, लेकिन भारत के मामले में, धर्म राष्ट्रीय एकीकरण का आधार होगा. यह एक विशेष धर्म नहीं है जो राष्ट्रीय चेतना को प्राप्त करने में सहायता करेगा, बल्कि सभी धर्म राष्ट्रीय एकता के लिए एक आधार के रूप में काम करेंगे क्योंकि आध्यात्मिकता सभी भारतीयों के रक्त में है और यहां तक कि अतीत के भारतीय भी विविधता में एकता के इस विचार को पहले ही सिद्ध कर चुके हैं. स्वामी विवेकानंद की शिक्षाएं

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 12, December 2022 |

स्वामी विवेकानंद की शिक्षाएं

· हमारा पहला दायित्व है कि हम स्वयं से नफरत न करें; क्योंकि प्रगति के लिए हमें सबसे पहले अपने ऊपर और फिर ईश्वर पर भरोसा अवश्य होना चाहिए. जो व्यक्ति अपने पर भरोसा नहीं करता, वह ईश्वर पर कभी भरोसा नहीं कर सकता.

· प्रत्येक कर्तव्य पवित्र है और कर्तव्य के प्रति समर्पण ईश्वर के प्रति सबसे बड़ी पूजा है.

· समाज सबसे बड़ा है, जहां सर्वोच्च सत्य व्यवहारिक बनते हैं.

· अपने पर भरोसा, भरोसा और भरोसा, ईश्वर में आस्था - यही महानता की कुंजी है............ स्वयं पर भरोसा रखें, और उस भरोसे के सहारे खड़े हों, और सुदृढ़ बने; यही हमारी जरूरत है.

· हिंदू सुदृढ़ थे, उनके श्रेय के लिए यह कहा जाता है, वे अपने समस्त विचारों में सुदृढ़ चिंतक थे, इतने सुदृढ़ कि उनकी एक चिंगारी पश्चिम के तथाकथित सुदृढ़ विचारकों को भयभीत कर देती थी.
· मेरे विचार में, किसी भी जाति को विवाह के पवित्रीकरण और अनुल्लंघनीयता के जरिए मातृभूमि के लिए अत्यंत सम्मान पैदा करना चाहिए.

·भारत में सीता वह नाम है, जिसके लिए सब कुछ नेक, शुद्ध और पवित्र है; वह सभी कुछ जिसमें हम औरत को औरत कहते हैं.

· त्याग और सेवा भारत के दो आदर्श हैं. इन दो मुद्दों को गहनता दें और बाकी सभी चीजें खुद ठीक हो जाएंगी.

· मेरे आदर्श को वास्तव में कुछ शब्दों में रखा जा सकता है और वह है: मानव जाति को अपनी दिव्यता का उपदेश देना, और जीवन के प्रत्येक क्षण में इसे प्रकट करना.[13,14,15]

·जीवन में मेरी पूरी महत्वाकांक्षा एक ऐसी मशीन को गति में स्थापित करना है, जो हर किसी के द्वार पर नेक विचार लाएगी, और फिर पुरुषों और महिलाओं को अपना भाग्य तय करने का अवसर प्रदान करेगी. उन्हें यह जानने दें कि हमारे और अन्य देशों के पूर्वजों ने जीवन के सबसे महत्वपूर्ण सवालों पर क्या सोचा है. उन्हें विशेष रूप से देखने दें कि अन्य अब क्या कर रहे हैं और फिर निर्णय लें. हमें रसायनों को एक साथ रखना है, क्रिस्टलीकरण उनके नियमों के अनुसार प्रकृति द्वारा किया जाएगा.

· सत्य मेरा ईश्वर है, ब्रह्मांड मेरा देश है.

· मुझे ऐसे धर्म पर गर्व है, जिसने दुनिया को सहिष्णुता और सार्वभौम स्वीकृति, दोनों बातें सिखाई हैं. हम न केवल सार्वभौमिक सहिष्णुता में विश्वास रखते हैं, बल्कि हम सभी धर्मों को सच मानते हैं. मुझे ऐसे राष्ट्र से सम्बद्ध होने पर गर्व है, जिसने धरती के सभी धर्मों और सभी राष्ट्रों के उत्पीड़ितों और शरणार्थियों को शरण प्रदान की. मुझे आपको यह बताते हुए गर्व हो रहा है कि हमने इस्राइलियों के सबसे शुद्ध अवशेषों को अपनाया, जो दक्षिण भारत में आए थे और उन्होंने उसी वर्ष हमारे साथ शरण ली थी, जिस वर्ष उनका पवित्र मंदिर रोमन अत्याचार से टुकड़े-टुकड़े हो गया था. मुझे उस धर्म से सम्बद्ध होने पर गर्व है, जिसने महान पारसी राष्ट्र के अवशेष को शरण प्रदान की और अभी भी उसे मजबूती प्रदान कर रहा है.

· हमारा जयघोष, स्वीकृति होगी, और बहिष्करण नहीं. मैं, न केवल सहिष्णुता में .... बल्कि स्वीकृति में विश्वास रखता हूं. मुझे क्यों बर्दाश्त करना चाहिए? सहिष्णुता का अर्थ है, कि मुझे लगता है कि आप गलत हैं और मैं सिर्फ आपको जीने की अनुमति दे रहा हूं. क्या यह सोचना ईश निंदा है कि आप और मैं दूसरों को जीने की अनुमति दे रहे हैं.

· दुनिया के धर्म बेजान मखौल बन गए हैं. दुनिया चरित्र चाहती है. दुनिया को उन लोगों की जरूरत है, जिनका जीवन निस्वार्थ प्रेम से संचालित है. वह प्रेम हर शब्द को वज्र जैसा बना देगा.

· वेदांत धर्म उच्चतम सामान्यीकरण और विकास के नियम का हवाला देकर वैज्ञानिक जगत की मांगें पूरी कर सकता है. वेदांत ने इस बात को पूरी तरह सिद्ध किया है कि किसी भी वस्तु का स्पष्टीकरण उसके भीतर से आता है. वेदांत के देव, ब्राह्मण के पास स्वयं के बाहर से कुछ भी नहीं है, कुछ भी नहीं.

·एक विचार, जो मुझे दिन के उजाले के रूप में स्पष्ट दिखाई देता है, वह है कि दुख अज्ञानता के कारण होता है, और किसी वजह से नहीं. दुनिया को रोशनी कौन देगा? अतीत में बलिदान एक नियम के रूप में रहा है, अफसोस कि यह आने वाले युगों के लिए भी बना

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 12, December 2022 |

रहेगा. सभी के कल्याण के लिए, पृथ्वी के सबसे अच्छे और सर्वश्रेष्ठ को अनेक लोगों की भलाई के लिए खुद को बलिदान करना होगा. अनंत प्रेम और दया के साथ सैकड़ों बुद्ध आवश्यक हैं.

· क्या ईश्वर ऐसा करेंगे कि सभी पुरुष इतने सुदृढ़ हों, कि उनके दिमाग में दर्शन, रहस्यवाद, भावना और कर्म के सभी तत्व समान रूप से मौजूद हों! यह मेरा आदर्श है, एक आदर्श इंसान का मेरा आदर्श.

· भारत में नारीत्व का आदर्श मातृत्व है- जिसका अर्थ है, अद्‌भुत, नि:स्वार्थ, सर्व दुखहरण और सदा क्षमा कर देने वाली मां.

o शिक्षा के बारे में

· शिक्षा मानव में पहले से निहित पूर्णता का प्रकटीकरण है.[16,17,18]

· शिक्षा से मेरा तत्पर्य वर्तमान प्रणाली से नहीं है, बल्कि रचनात्मक शिक्षण के साथ है. केवल किताबी शिक्षा काम नहीं करेगी. हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है, जो चरित्र का निर्माण करे, मन की शक्ति बढ़ाए, बुद्धि का विस्तार करे और जिसके द्वारा व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सके.

· जो शिक्षा आम लोगों को जीवन के संघर्ष के लिए खुद को तैयार करने में मदद नहीं करती है, जो चरित्र की ताकत, परोपकार की भावना और एक शेर की हिम्मत नहीं लाती है - क्या वह शिक्षा कहलाने योग्य है? वास्तविक शिक्षा वह है, जो किसी को अपने पैरों पर खड़े होने में सक्षम बनाती है.
· कर्म करने मात्र से व्यक्ति को वह जगह मिल सकती है, जहां पहुंचने के लिए बुद्ध को लंबे समय तक ध्यान लगाना पड़ा या ईसा मसीह को प्रार्थना करनी पड़ी.

अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करते हुए, उन्होंने हिंदू धर्म के बारे में दुनिया को जगाया. 21वीं सदी में वैश्विक युवाओं को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है. इनमें पहचान के संकट से लेकर वित्तीय बोझ तक, संकुचित सामाजिक मानदंडों से लेकर बहुसांस्कृतिक सामाजिक व्यवस्था की चुनौतियों तक शामिल हैं. विवेकानंद के पास आज के युवाओं के लिए एक महत्वपूर्ण संदेश था. यह हमारे दिलों में मानव मन और करुणा की ताकत थी. विवेकानंद का दर्शन ''जीव ही सेवा है'' उनका मूल मंत्र था, जो महात्मा गांधी से लेकर हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तक के आधुनिक भारतीय बौद्धिक विचारों का आधार बन गया. महात्मा ने एक बार लिखा था 'मैंने स्वामी विवेकानंद के कार्यों का भली-भांति अध्ययन किया है, और उनको समझने के बाद, मेरे मन में देश के लिए जो प्यार था, वह हजार गुना हो गया. उनके लेखन को किसी परिचय की आवश्यकता नहीं है.

''यदि मैं अपने अनंत दोषों के बावजूद खुद से प्यार करता हूं, तो मैं कुछ दोषों की झलक से कैसे किसी से नफरत कर सकता हूं''

वह अपनी छाप छोड़ता है.' स्वामी विवेकानंद ने स्वतंत्र भारतीय विचारधारा को आकार दिया और भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के आध्यात्मिक अग्रदूत के रूप में योगदान दिया. उनके इस योगदान को 'इंडियन अनरेस्ट' के लेखक वेलेंटाइन चिरोल ने कलमबद्ध किया. उन्होंने विवेकानंद की शिक्षाओं को भारत में राष्ट्रवादी आंदोलन के प्रमुख कारणों में से एक बताया.

समसामयिक युग में विवेकानंद की प्रासंगिकता

समसामयिक युवा ज्यादातर दूसरी पीढ़ी के शिक्षार्थी होते हैं जो व्यावहारिक रूप से जीवन की चुनौतियों से निपटते हैं. वे अपने पूर्ववर्तियों के विपरीत समाज की शक्ति संरचनाओं पर सवाल उठाने के लिए बेहतर तरीके से सुसज्जित हैं. हालांकि, रोज़गार, सामाजिक मान्यता और किसी राष्ट्र विशेष के साथ उनकी संबद्धता के बड़े सवाल की तरह उनकी दुविधाएं अभी भी बरकरार हैं. ये दुविधाएं इस महान राष्ट्र में उपलब्ध मानवीय संसाधनों को कट्टरपंथी समूहों के गुटीय प्रचार के प्रति कमजोर बनाती हैं. विश्व स्तर पर आईएसआईएस जैसे गुुट और राष्ट्रीय स्तर पर नक्सलियों द्वारा इस प्रचार को अंजाम दिया जा रहा है. स्वामी विवेकानंद ने राष्ट्र को एक संघनित संपूर्ण के रूप में माना, जहां रोज़गार केवल आय का स्रोत होने के बजाय दूसरों की सेवा करने का माध्यम होगा. इसके अतिरिक्त, विवेकानंद युवाओं की क्षमताओं को भारतीय राष्ट्र की मजबूती में सबसे बड़े निर्धारक के रूप में भी देखते हैं. उनके लेखन और उनके इस विश्वास ने, कि हिंदू धर्म का केंद्रीय संदेश जरूरतमंदों और दलितों की सेवा करना है, पंडित दीन दयाल उपाध्याय और वीर सावरकर जैसे महान दार्शनिकों को जन्म दिया. आधुनिक भारतीय दर्शन में अंत्योदय, वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार द्वारा उनके मंत्र 'तुष्टिकरण के बिना सशक्तिकरण' के माध्यम से भी परिलक्षित होता है.

'ब्रह्मांड में पहले से ही सभी शक्तियां हमारी हैं. यह हम ही हैं, जिन्होंने अपनी आंखों पर हाथ रखे हैं और रो रहे हैं कि अंधेरा है''

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 12, December 2022 |

विवेकानंद का तर्क है कि हमारा लक्ष्य पूरे समाज की सेवा करना है और वे इसेे हासिल करने के लिए व्यक्ति को सशक्त बनाने के एक दर्शन का निर्माण करते हैं. उनके विचारों को एक कर्मयोगी के रूप में वर्णित किया जा सकता है. भारत के नागरिक उनके संदेशों से बहुत कुछ सीख सकतेे हैं. दृढ़ निश्चय और समर्पण के साथ शुरूआत करना, व्यक्तिगत आकांक्षाओं के साथ-साथ सामाजिक प्रगति हासिल करने के लिए एक पूर्वशर्त है.

21 वीं सदी में भारतीयों के लिए विवेकानंद का सबसे महत्वपूर्ण संदेश है- आत्म विश्वास. उन्होंने पश्चिम की सर्वोच्चता को चुनौती दी और 1893 की धर्म संसद में साबित किया कि हिंदू धर्म जीवन का सबसे प्राचीन और पूर्ण दर्शन है. उनका भाषण आधुनिकता के संस्थापक सिद्धांतों के लिए[17,18,19] एक वास्तविकता की जांच भी थी, जो उत्पादन को मानव के समक्ष रखकर उसे अलग कर देता है. उनका संदेश बुलंद और और स्पष्ट था कि करुणा और प्रेम सामाजिक और वैश्विक सद्भाव तक पहुंचने का माध्यम हैं. उन्होंने कहा कि आध्यात्मिक जागृति के बिना आर्थिक सशक्तिकरण एक आधा अधूरा लक्ष्य होगा. वेदान्तिक शिक्षाएं पश्चिम को एक तर्कसंगत और मानवतावादी उद्यम के रूप में धर्म की उपयोगिता समझाती हैं. उनके संदेश आधुनिक भारतीय राष्ट्र और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की मूल विशेषताओं के आधार थे.

लोकतांत्रिक अधिकारों के लिए बड़े पैमाने पर समर्थन स्वामी विवेकानंद का राष्ट्र के लिए एक और महत्वपूर्ण योगदान है जो अभी भी कई मायनों में प्रासंगिक है. चिंतन एवं विचार-विमर्श की स्वतंत्रता पर उनके विचार वर्तमान परिस्थितियों में पथ प्रदर्शक हैं, जिसमें मीडिया कर्मियों, आरटीआई कार्यकर्ताओं और स्वतंत्र लेखकों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति पर कई तरह के दबाव हैं. जाति और वर्ग विभाजन केे सर्वनाश और अधिक समानता के लिए विवेकानंद का आह्वान उन सभी देशवासियों के लिए वरदान साबित हो सकता है जो हमारे देश में जाति और वर्ग श्रेणीबद्ध व्यवस्था के अपमानजनक रूपों के चंगुल में बुरी तरह से फंसे हुए हैं.

विवेकानंद जी के अनुसार, सहिष्णुता सद्भाव की गारंटी नहीं है, इससे समुदायों के बीच परस्पर संघर्ष कम हो सकता है. परन्तु, करुणा आम सहमति और सद्भाव की गारंटी दे सकती है, यदि उसका पालन सच्ची भावना के साथ किया जाये. दिन-प्रतिदिन के जीवन में यह संदेश सार्वजनिक नीति और समाज में लोकतंत्रीकरण के लिए मार्गदर्शक हो सकता है. हम अक्सर दुनिया की अन्य संस्कृतियों के प्रति असहिष्णुता के बारे में समाचार देखते हैं, इस संबंध में विवेकानंद आधुनिकता से अधिक आधुनिक थे क्योंकि उन्होंने दावा किया था कि सभी धर्म सच्चे हैं और किसी धर्म की अन्य धर्म से श्रेष्ठता के कारण प्राच्य धर्मों की प्रतिष्ठा कम नहीं होगी.

राष्ट्र और व्यक्ति

स्वामी विवेकानंद ने एक राष्ट्र की कल्पना सशक्त मानवों की एक समेकित इकाई के रूप में की, जहां प्रगति का अर्थ है दबे-कुचले लोगों की मदद करने की क्षमता और विकास में का अर्थ है आध्यात्मिक उद्देश्य के साथ भौतिक उपलब्धियां. उनके विचार में राष्ट्र एक 'संघनित' इकाई है, जो दुनिया भर में मानवता की सेवा के लिए हमेशा तैयार रहे. राष्ट्र के उनके विश्लेषण में व्यक्तिगत चेतना सबसे महत्वपूर्ण कारक थी. उनके लिए, अंतरात्मा परमेश्वर की आवाज है जो कभी गलत नहीं हो सकती. विवेकानंद को मानवीय क्षमताओं में दृढ़ विश्वास था. उनका मानना था कि मानव मन ईश्वर की सबसे शक्तिशाली रचना है. लेकिन इसके साथ ही वे कारण और जुनून के बीच द्विभाजन के प्रति सजग थे. उन्होंने उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में संघर्षों को धर्म, विश्वास, और मानव तर्क संगतता की गलत व्याख्या के परिणामस्वरूप देखा. उन्होंने कभी भी सतही दृष्टिकोण का तर्क नहीं दिया, बल्कि उन्होंने पश्चिमी देशों को उनके सीमित विश्व दृष्टिकोण के बारे में जगाने की कामना की. यही कारण है कि उन्होंने कहा ''दूसरों को न्याय करने में हम हमेशा उन्हें अपने आदर्शों द्वारा न्याय प्रदान करते हैं. यह स्थिति वह नहीं है, जो होनी चाहिए. सभी को उनके आदर्श के अनुसार न्याय मिलना चाहिए, किसी अन्य के आदर्श के अनुरूप नहीं.'' उन्होंने एक बार कहा था कि 'पश्चिम में सामाजिक जीवन हंसी के ढेर की तरह है, लेकिन इसके नीचे एक अपशकुन है. सारी बात एक झटके में खत्म हो जाती है. मजेदार और तुच्छता सभी सतह पर है, वास्तव में, यह दुखद तीव्रता से भरा है. यहां यह दु:खद है और बाहर की ओर उदास है, लेकिन, इसके तले अनासक्ति और उदासी है'.

विवेकानंद ने आध्यात्मिक कल्याण से उत्पन्न राष्ट्रीय कल्याण को महसूस किया, क्योंकि वे जानते थे कि राष्ट्रीय चरित्र एक दिन में नहीं बनाया जा सकता, यह इतिहास, धर्म, संस्कृति और विभिन्न अन्य घटकों द्वारा आकार ग्रहण करता है. उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय कल्याण के लिए, हमें सबसे पहले दौड़ के लिए सभी आध्यात्मिक बलों की तलाश करनी चाहिए, जैसा कि योर के समय में किया गया था और आने वाले समय में किया जाएगा.

''अपने जीवन में जोखिम उठाइए. यदि आप जीतते हैं, तो आप नेतृत्व कर सकते हैं, यदि आप हार जाते हैं, तो मार्गदर्शन कर सकते हैं''

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 12, December 2022 |

उपर्युक्त तर्कों की पंक्ति में एक बार उन्होंने कहा था कि ‘‘कोई भी राष्ट्र जनता के बीच शिक्षा और बुद्धि के प्रसार के अनुपात में उन्नत होता है.’’ वे हमेशा चाहते थे कि राज्य लोगों के अनुकूल आर्थिक और सामाजिक नीतियों को लागू करने और लागू करने के द्वारा सार्वजनिक कल्याण के लिए काम करे.

भारतीय राजनीतिक पुनर्जागरण परंपरा के एक महान दार्शनिक, रामकृष्ण मिशन के संस्थापक, स्वामी विवेकानंद को देश के प्रति उनके अविस्मरणीय योगदान के लिए हमेशा याद किया जाएगा. उन्हें पश्चिमी दुनिया में हिंदू धर्म के सच्चे चेहरे और भारतीय सभ्यता की महानता के बारे में भारतीयों में जागरूकता फैलाने का श्रेय दिया जाता है. वे औपनिवेशिक भारत के दौरान एक प्रमुख हस्ती थे, लेकिन भारतीय संस्कृति और राष्ट्र के पुनरुद्धार के लिए उनका दृष्टिकोण, समय की सीमा से परे है. नौजवानों को उनका संबोधन, लोकतांत्रिक अधिकारों के लिए समर्थन, वेदान्तिक दर्शन को धता बताना और नव-वेदांत दर्शन, राष्ट्रीय एकता के आधार के रूप में धर्म, जाति और वर्ग विभाजन को तोडने, सार्वभौमिक सद्भाव, समुदाय के प्रति समर्पित होने की लोगों से अपील करने, आदि उनके आदर्श हैं, जो 21 वीं सदी में उभरती समस्याओं के समाधान में भारतीय राज्य का मार्ग प्रशस्त करेंगे और वे आने वाली पीढ़ियों के लिए हमेशा मार्गदर्शक रहेंगे.

कुल मिलाकर, उन्होंने न केवल पुनरुत्थानशील भारत की कामना की बल्कि उसे एक मजबूत और स्वतंत्र राष्ट्र में बदलने का रोडमैप प्रदान किया. विवेकानंद सभी भारतीयों और दुनिया भर के लोगों के लिए एक प्रेरणा हैं और हमेशा बने रहेंगे.

III. परिणाम

'राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक कार्यक्रम नहीं है। राष्ट्रवाद ईश्वर की इच्छा से उत्पन्न एक धर्म है। राष्ट्रवाद वह धर्म है जिसे आपको जीना है, अगर आप खुद को राष्ट्रवादी कहते हैं तो आपको यह भी याद रखना है कि आप अपनी मातृभूमि कि मुक्ति के लिए परमात्मा के उपकरण मात्र हैं, राष्ट्रवाद ईश्वर की शक्ति से संचालित होता है और इसे कुचलने के लिए चाहे लाख हथियार उठाये जाएँ, इसे समाप्त करना संभव नहीं है। राष्ट्रवाद अनश्वर है, यह मर नहीं सकता, क्योंकि यह मानवीय वस्तु नहीं है, राष्ट्रवाद ईश्वर है और ईश्वर को मारा नहीं जा सकता, ईश्वर को सलाखों के पीछे नहीं डाला जा सकता।' (श्री अरविन्द)

2001 की घटना के बाद अमेरिका के रणनीति विशेषज्ञ सेम्युएल हेन्तिंग्टननंस ने पिछले 25 -30 वर्षों की खोज के बाद कहा 'हम कौन हैं?' और इसके निष्कर्ष में बताया 'अमेरिका में भले ही विश्व के लगभग सभी समुदायों के लोग बसते हैं किन्तु अमेरिका की मौलिक पहचान श्वेत, आंग्ल-सैक्शन , प्रोतेस्तंत ही हैं। बाकी सभी समुदाय इसमें शामिल हैं'। हाल ही में क्रिश्मस के अवसर पर ऑक्सफोर्ड में बोलते हुए ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने घोषणा की- 'ब्रिटेन एक ईसाई राष्ट्र है और इसे कहने में किसी को संकोच अथवा भय की आवश्यकता नहीं'।

'राष्ट्रीयता का आधार धर्म व संस्कृति होता है' (स्वामी विवेकानंद)...स्वामी विवेकानंद का चिंतन 120 वर्ष बाद सत्य सिद्ध हो रहा है। उन्होंने कहा था 'राष्ट्रीयता का आधार धर्म व संस्कृति' ही होता है। उन्होंने हिन्दुत्व को भारत की राष्ट्रीय पहचान के रूप में प्रतिष्ठित किया। 17 सितम्बर 1893 को शिकागो में धर्म सभा में उन्होंने भारत को हिन्दू राष्ट्र के नाम से महिमा मंडित किया और स्वयं के हिन्दु होने पर गर्व को विस्तार से विश्लेषित किया। उन्होंने बताया हिन्दू धर्म का प्रबंध ही हिन्दुत्व की राष्ट्रीय परिभाषा है। इसे राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में समझने पर हमें हमारे विशाल देश की बाहरी विविधता में अन्तर्निहित एकता के दर्शन होते हैं। सहस्त्राब्दियों से यह भारत वर्ष आर्यावर्त एक संघ संस्कृतिक राष्ट्र रहा है। शिकागो से वापसी पर उन्होंने कहा कि 'केवल अंध देख नहीं पाते, और विक्षिप्त बुद्धि समझ नहीं पाते कि यह सोया देश अब जाग उठा है, अपने पूर्व गौरव को प्राप्त करने के लिए इसे अब कोई नहीं रोक सकता।' उन्होंने सभी हिन्दुओं को सब भेदों से ऊपर उठकर अपनी राष्ट्रीय पहचान पर गर्व करना सिखाया। एक बार लाहौर में उनके सम्मान में सनातनी, आर्यसमाजी तथा सिखों ने अलग-अलग सभाओं का आयोजन करना चाहा तो उन्होंने इसे अस्वीकार कर दिया और सबको एक ही मंच पर आह्वान किया। वहां उन्होंने हिन्दुत्व के सामान्य आधार पर अपना आख्यान दिया। भारत वर्ष के सन्दर्भ में उन्होंने यथार्थ दर्शाते हुए कहा-'भारत भूमि पवित्र भूमि है, भारत मेरा तीर्थ है, भारत मेरा सर्वस्व है, भारत की पुण्यभूमि का अतीत गौरवमय है, यही वह भारत वर्ष है जहाँ मानव, प्रकृति एवं अंतर्जगत की रहस्यों की जिज्ञासाओं के अंकुर पनपे थे। उन्होंने कहा था चिंतन-मनन कर राष्ट्र चेतना जाग्रत करो लेकिन आध्यात्मिकता का आधार न छोडो। उनका स्पष्ट मत था कि पाश्चात्य जगत का अमृत हमारे लिए विष हो सकता है। युवाओं का आह्वान करते हुए स्वामी जी कहा करते थे 'भारत के राष्ट्रीय आदर्श, सेवा व त्याग हैं, नैतिकता, तेजस्विता, कर्मण्यता का अभाव न हो, उपनिषद ज्ञान के भंडार हैं, उनमें अद्भुत ज्ञान शक्ति है, उसका अनुसरण कर अपनी निज पहचान व राष्ट्र का अभिमान स्थापित करो।' [19,20]

1896 कि विदेश यात्रा के बाद विवेकानंद ने पूरे देश का दौरा किया। उन्होंने कहा-'एक शताब्दी के ब्रिटिश शासन ने जो आघात किया है उतना अब तक के कोई आक्रान्ता नहीं कर पाए, भारत के मन को तोड़ने का कार्य ब्रिटिश लेखकों, शिक्षाविदों ने सफलता पूर्वक किया।' उन्होंने पूछा 'यह कौन सी शिक्षा है जो आपको पहला पाठ पढ़ाती है कि आपके माता-पिता व पूर्वज मूर्ख हैं और

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 12, December 2022 |

आपके आराध्य देवी-देवता शैतान ? आज से ५० वर्ष पूर्व जिस देश के युवाओं कि आँखों में भय अथवा संकोच नहीं था, आज उस देश के युवा निस्तेज क्यूँ हैं? स्वामी जी ने इस पीड़ा को अनुभव किया और कन्याकुमारी में देश के युवाओं का सिंहत्व जगाने का चुनौती पूर्ण संकल्प लिया। स्वामी विवेकानंद ने बार -बार कहा कि 'भारत के पतन का कारण धर्म नहीं है अपितु धर्म के मार्ग से दूर जाने के कारण ही भारत का पतन हुआ है। जब- जब हम धर्म को भूल गए तभी हमारा पतन हुआ है और धर्म के जागरण से ही हम पुनः नवोत्थान की और बढे हैं। स्वामी जी ने धर्मग्लानी के तीन कारणों को प्रमुखता से चिन्हित किया-

'जन सामान्य का अनादर/'नारी शक्ति का अपमान/'शुभ कार्य में रत लोगों में आपसी ईष्र्या। उन्होंने जोर देकर कहा कि उपरोक्त तीन समस्याओं का निदान ही भारत के उठान का एक मात्र उपाय है। स्वामी जी की प्रेरणा से तीनों समस्याओं के निराकरण के लिए अनेक अभियान चलाये गए और बड़ी मात्र में जागृति भी हुई। विश्व का सबसे बड़ा स्वयंसेवी संगठन 'राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ' भी स्वामी विवेकानंद जी कि प्रेरणा से ही बना जो आज सम्पूर्ण विश्व में निःस्वार्थ भाव से सेवा कर रहा है। स्वामी जी ने स्पष्ट किया कि जब तक भारत में धर्म प्रतिष्ठित नहीं होता तब तक सारे प्रयास अधूरे हैं। उन्होंने कहा कि भारतीय होने का क्या अर्थ है, इसे समझें और इसे समझने के लिए अपने पूर्वजों के धर्म एवं संस्कृति के आधार पर राष्ट्रीयता को जाने। स्वामी जी का मानना था कि मात्र भूमि कि सेवा के बिना मुक्ति नहीं मिल सकती है। उनके विचारों के प्रति भगिनी निवेदिता ने कहा-'विवेकानंद के विचारों का संगीत शास्त्र, गुरु और मात्रभूमि-इन तीन स्वर लहरियों से निर्मित हुआ है। इन्हीं से उनको ये उपकरण मिले जिनसे विश्व विकार को दूर करने वाले आध्यात्मिक वरदान की विशल्यकरनी उन्होंने प्रस्तुत की। हम उनके इन्हीं प्रखर विचारों के लिए उनको जन्म देने वाली पुण्य भूमि को, तथा जिन अदृश्य शक्तियों ने उन्हें विश्व में भेजा, उनको धन्य कहते हैं और स्वीकार करते हैं कि उनके महान सन्देश की व्यापकता और सार्थकता का मर्म जानने में हम अभी तक असमर्थ रहे हैं।

नरेंद्र नाथ से विवेकानंद का सफर-मात्र ३० वर्ष की आयु में विश्व धर्म सभा में भारतीय ज्ञान एवं गौरव का ध्वज फहराने वाले स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी 1863 को कलकत्ता में हुआ था। इनके बचपन का नाम वीरेश्वर था और इनकी माता जी इन्हें 'विले' कहकर पुकारती थी तथा इनके पिता द्वारा इनका नाम नरेंदर नाथ रखा गया था। इनके पिता श्री विश्वनाथ, कलकत्ता उच्च न्यायालय के प्रसिद्ध वकील थे तथा माता श्रीमती भुवनेश्वरी देवी एक धार्मिक महिला थी। बचपन में कुशाग्र बुद्धि व नटखट नरेंद्र का सपना एक ऐसे राष्ट्र निर्माण का था जिसमे जाति, धर्म के आधार पर भेदभाव न रहे। समता के सिद्धांत का जो आधार विवेकानंद ने प्रस्तुत किया था, उससे सबल बौद्धिक आधार आज भी प्राप्त नहीं होता। नरेंद्र नाथ के मन में गुरु के प्रति अत्यंत निष्ठां एवं भक्ति थी। 25 वर्ष की आयु में नरेंद्र ने गेरुवे वस्त्र धारण कर सम्पूर्ण भारत वर्ष की पैदल यात्रा की। अब नरेंद्र नाथ अपने गुरु के आदेश से विवेकानंद बन चुके थे। 1893 में शिकागो में विश्व धर्म संसद का आयोजन किया गया। शिकागो के प्रथम गिरिजाघर के वरिष्ठ पादरी जान हेनरी बेरोज (रंनद ीमदंतल इमतवर) के नेतृत्व में इसका आयोजन किया गया था जिसका मूल उद्देश्य कहीं न कहीं ईसाई धर्म को श्रेष्ठ बताना ही था। बाद में स्वामी जी ने अपने पत्र में लिखा- 'ईसाई धर्म का अन्य सभी धार्मिक विश्वासों के ऊपर वर्चस्व साबित करने हेतु विश्व धर्म महासभा का संगठन किया गया था'। अपने एक साक्षात्कार में भी स्वामी जी ने कहा-'मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि यह विश्व धर्म महासभा जगत के समक्ष अक्रिस्तियों का मजाक उड़ाने हेतु आयोजित कि गई है' यद्यपि इस आयोजन कि कल्पना श्री चार्ल्स कराल बोनी (बींतसे ां तंस इंनदप) जो एक सुविख्यात वकील व अंतरराष्ट्रीय कानून एवं आदेश लीग के अध्यक्ष पद पर सुशोभित थे, ने 1889 में की थी। जिस समय शिकागो में 1893 में धर्म सम्मलेन हुआ, उस समय पाश्चात्य जगत भारत को हीन दृष्टि से देखता था। वहां के लोगों ने बहुत प्रयास किया कि विवेकानंद को सर्व धर्म परिषद् में बोलने का समय ही ना मिले, मगर एक अमेरिकी प्रोफेसर के प्रयास से उन्हें थोडा समय मिला। उनके विचारों ने अमेरिका में तहलका मचा दिया। वहाँ के मिडिया ने उन्हें 'साइक्लोनिक हिन्दू' का नाम दिया। अध्यात्म विद्या और भारतीय दर्शन के बिना विश्व अनाथ हो जायेगा' कहकर स्वामी जी ने पुनः भारत को विश्व गुरु पद पर प्रतिष्ठित कर दिया। गुरुदेव रविंदर नाथ टैगोर के अनुसार-
'यदि आप भारत को जानना चाहते हैं तो विवेकानंद को पढ़िए, उसमें सब कुछ सकारात्मक पायेंगे, नकारात्मक नहीं'। रोमा रोलां ने कहा था-'उनके द्वितीय होने कि कल्पना करना भी असंभव है, वे जहाँ भी गए सर्वप्रथम हुए, हर कोई उनमें अपने नेता का दिग्दर्शन करता है। वे ईश्वर के प्रतिनिधि थे और सब पर प्रभुत्व प्राप्त कर लेना ही उनकी विशिष्टता थी। हिमाचल प्रदेश में एक बार एक अनजान व्यक्ति उन्हें देख कर ठिठक गया और आश्चर्य पूर्वक चिल्ला उठा-'शिव!' यह ऐसा हुआ मानो उस व्यक्ति के आराध्य देव ने अपना नाम उनके माथे पर लिख दिया हो। स्वामी विवेकानंद केवल एक संत ही नहीं थे, एक महान देशभक्त, वक्ता, विचारक, लेखक व मानवता प्रेमी भी थे। स्वतंत्रता आन्दोलन में उन्होंने देशवासियों का आह्वान किया कि नए भारत के निर्माण के लिए मोची की दुकान, भड़भूजे के भाड़, कारखाने से, हाट से, बाजार से, निकल पड़ो, खेत से खलियान से, झाड़ियों और जंगलों से, पहाड़ों और पर्वतों से, तब ही नव भारत का निर्माण होगा। परिणाम स्वरुप जनता निकल पड़ी। आजादी की लड़ाई में गाँधी जी को जो जन समर्थन मिला था, यह उसी आह्वान का प्रतिफल था।

महात्मा गाँधी ने कहा था-मैंने स्वामी जी के ग्रन्थ बड़े ही मनोयोग से पढ़े हैं और इसके फलस्वरूप देश के प्रति मेरा प्रेम हजारों गुना बढ़ गया है। नेता जी सुभाष चन्द्र बोस ने अपने विचारों में कहा-स्वामी विवेकानंद का धर्म राष्ट्रीयता को उत्तेजना देने वाला धर्म था। स्वामी जी ने स्पष्ट रूप से राजनीति का एक भी सन्देश नहीं दिया था, पर जो कोई भी उनकी रचनाओं के संपर्क में आया, उसमें अपने आप ही देशभक्ति और राजनैतिक मानसिकता उत्पन्न हो गई।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 12, December 2022 |

IV. निष्कर्ष

पंडित जवाहर लाल नेहरु के अनुसार-पता नहीं आज की युवा पीढ़ी में से कितने लोग स्वामी विवेकानंद के लेख व्याख्यान पढ़ते हैं पर मेरी पीढ़ी के बहुत से नवयुवक उनसे अत्यधिक प्रभावित हुए थे। मेरा विचार है कि वर्तमान पीढ़ी भी अगर स्वामी जी कि रचनाओं का अनुशीलन करे तो उसका बड़ा ही कल्याण होगा'। महाकवि दिनकर ने स्वामी जी के लिए कहा था-विवेकानंद वह सेतु हैं जिस पर प्राचीन और नवीन भारत परस्पर आलिंगन करते हैं, विवेकानंद वह समुद्र हैं जिसमे धर्म और राजनीति, राष्ट्रीयता और अंतर्राष्ट्रीयता तथा उपनिषद और विज्ञान, सबके सब समाहित होते हैं'। उनका कहना था 'उठो, जागो, स्वयं जागकर औरों को जगाओ! अपने मानव जन्म को सफल करो और तब तक रुको नहीं जब तक कि लक्ष्य प्राप्त न हो जाए। 4 जुलाई 1902 को उन्होंने शुक्ल यजुर्वेद कि व्याख्या की और कहा-एक और विवेकानंद चाहिए, यह समझने के लिए कि इस विवेकानंद ने अब तक क्या किया है' शायद उन्हें अपनी मृत्यु का पूर्वाभास हो गया था। उसी दिन बेलूर के रामकृष्ण मठ में उन्होंने ध्यानावस्था में ही प्राण त्याग दिये।[20]

संदर्भ

1. Aspects of the Vedanta, p.150
2. ↑ "Bhajanānanda (2010), Four Basic Principles of Advaita Vedanta, p.3" (PDF). मूल से 7 मार्च 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 12 जनवरी 2016.
3. ↑ Michelis 2005.
4. ↑ Dutt, Harshavardhan (2005), Immortal Speeches, नई दिल्ली: Unicorn Books, p. 121, ISBN 978-81-7806-093-4
5. ↑ "Swami Vivekananda Punyatithi [Hindi]: स्वामी विवेकानंद जी क्यों रहे मोक्ष से वंचित". S A NEWS (अंग्रेज़ी में). 2021-07-04. अभिगमन तिथि 2021-07-04.
6. ↑ क्रान्त (2006). / स्वाधीनता संग्राम के क्रान्तिकारी साहित्य का इतिहास जाँचें |url= मान (मदद). 2. नई दिल्ली: प्रवीण प्रकाशन. पृ° 390. आईऍसबीऍन 81-7783-119-4. मूल से 14 अक्तूबर 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 4 जुलाई 2013.
7. ↑ शुक्ल, पंडित विद्याभास्कर. "स्वामी विवेकानंद का जीवन परिचय". मूल से 19 अगस्त 2019 को पुरालेखित.
8. ↑ Paul 2003, पृ° 5.
9. ↑ Banhatti 1995, पृ° 1.
10. ↑ Badrinath 2006, पृ° 3.
11. ↑ Bhuyan 2003, पृ° 4.
12. ↑ Nikhilananda 1964.
13. ↑ Sen 2003, पृ° 20.
14. ↑ Banhatti 1995, पृ° 2.
15. ↑ Banhatti 1995.
16. ↑ Banhatti 1995, पृ° 4.
17. ↑ Chakrabarti 2001, पृ°प° 628–631.
18. ↑ Sen 2003, पृ° 21.
19. ↑ Sen 2006, पृ°प° 12–14.
20. ↑ Sen 2003, पृ°प° 104–105.

INNO SPACE

SJIF Scientific Journal Impact Factor

Impact Factor: 7.580

doi crossref

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL

OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

+91 99405 72462 +91 63819 07438 ijmrsetm@gmail.com